NEERAJ®

प्रेमचंद

BHDE - 143

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Jyoti Babbar
&
Sanjay Jain

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

प्रेमचंद

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. प्रेमचंद का परिचय और साहित्य 1

2. 'सेवासदन' का कथानक और अंतर्वस्तु 15

3. 'सेवासदन' का परिवेश और संरचना-शिल्प 29

4. 'सेवासदन' के चरित्र 35

5. 'कर्बला' की अंतर्वस्तु और मूल्यांकन 46

6. 'साहित्य का उद्देश्य' का वाचन और व्याख्या 52

7. 'साहित्य का उद्देश्य' का विश्लेषण एवं मूल्यांकन 65

8. 'पूस की रात' कहानी का वाचन एवं व्याख्या 73

9. 'पूस की रात' कहानी की कथावस्तु और विश्लेषण 81

10. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का वाचन और व्याख्या 93

11. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन 102

12. 'पंच परमेश्वर' कहानी का वाचन और व्याख्या 110

13. 'पंच परमेश्वर' कहानी का विश्लेषण और मूल्यांकन 120

14. 'ईदगाह' कहानी का वाचन और व्याख्या 126

15. 'ईदगाह' कहानी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन 138

16. 'दो बैलों की कथा' कहानी का वाचन 144

17. 'दो बैलों की कथा' कहानी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन 154

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

प्रेमचंद

BHDE-143

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(क) महाशय विट्ठलदास इस समय ऐसे खुश थे मानो उन्हें कोई सम्पत्ति मिल गई हो। उन्हें विश्वास था कि पद्मसिंह इस जरा से कष्ट से मुँह न मोड़ेंगे, केवल उनके पास जाने की देर है। वह होली के कई दिन पहले से शर्माजी के पास नहीं गए थे। यथाशक्ति उनकी निंदा करने में कोई बात उठा न रखी थी, जिस पर कदाचित् अब वह मन में लज्जित थे, जिस पर भी शर्माजी के पास जाने में उन्हें जरा भी संकोच न हुआ। उनके घर की ओर चले।

उत्तर प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद के उपन्यास 'सेवासदन' से लिया गया है। विट्ठलदास सुमन को सेवासदन आश्रम में रहने को राजी करता है। सुमन जाने से पहले पं. पद्मसिंह को उसके पास बात करने के लिए बुलाने की शर्त रखती है।

विट्ठलदास ने पद्मसिंह की निंदा भी की थी और काफी दिन से उनके पास नहीं गए थे। फिर भी वे प्रसन्न थे और उन्हें विश्वास था कि पद्मसिंह इतना कष्ट तो झेल लेंगे और सुमन के पास बात करने आ जाएंगे।

व्याख्या सुमन की बात सुनकर विट्ठलदास खुश थे, मानो कोई संपत्ति पा ली हो। उन्हें भरोसा था कि पद्मसिंह उनकी दोस्ती और एक स्त्री के उद्धार के लिए इतनी बात तो मान लेंगे। हालांकि वे होली से पहले से पद्मसिंह के पास नहीं गए थे और पद्मसिंह की निंदा भी की थी, फिर भी उन्हें विश्वास था कि पद्मसिंह उनकी बात नहीं टालेंगे और यह तो एक प्रकार से समाज सेवा का काम भी है। यही सब सोचकर विट्ठलदास बिना संकोच के रात दस बजे भी पद्मसिंह के घर की ओर चल पड़े।

विशेष 1. जब व्यक्ति नि:स्वार्थ भाव से किसी की सहायता करना चाहता है, तो वह प्रसन्नता के साथ कष्ट भी उठाने को तैयार रहता है।

2. भाषा वर्णनात्मक एवं भाव प्रवण है।

3. चित्रात्मक अभिव्यक्ति है।

(ख) हमारे लिए कविता के वे भाव निरर्थक हैं, जिनसे संसार की नश्वरता का आधिपत्य हमारे हृदय पर और दृढ़ हो जाय, जिनसे हमारे हृदयों में नैराश्य छा जाए। वे प्रेम कहानियाँ, जिनसे हमारे मासिक पत्रों के पृष्ठ भरे रहते हैं, हमारे लिए अर्थहीन हैं, अगर वे हममें हरकत और गरमी नहीं पैदा करतीं। अगर हमने दो नवयुवकों की प्रेम कहानी कह डाली, पर उससे हमारे सौन्दर्य प्रेम पर कोई असर न पड़ा और पड़ा भी तो केवल इतना ही कि हम उनकी विरह व्यथा पर रोये, तो इसमें हममें कौन-सी मानसिक या रुचि संबंधी गति पैदा हुई?

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-6, पृष्ठ-61, प्रश्न 3(ख)

(ग) पत्र-संपादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर अतिक्रमण करता है, परन्तु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिलित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्यायपरायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान है। नवयुवक युवावस्था में कितना उद्दंड रहता है। माता-पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं। वे उसे कुल-कलंग समझते हैं, परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है, यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-12, पृष्ठ-117, प्रश्न 15(ङ)

(घ) खिलौने से क्या फायदा? व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आँख उठाकर नहीं देखता। यह तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूट बराबर हो जायेंगे या छोटे बच्चे जो मेले में नहीं आए हैं जिद करके ले लेंगे और तोड़ डालेंगे। चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग माँगने आये तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फुरसत है कि बाजार आयें और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज हाथ जला लेती हैं।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-14, पृष्ठ-134, प्रश्न 20(ग)

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ङ) संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोई को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे कहाँ भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोई ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता तो दोनों पीछे की ओर जोर लगाते। मारता तो दोनों सींगें नीची करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती तो झूरी से पूछते 'तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो'?

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-16, पृष्ठ-150, प्रश्न 16(1)

प्रश्न 2. प्रेमचंद की कहानियों का परिचय दीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'कहानीकार प्रेमचंद'

प्रश्न 3. 'सेवासदन' के कथानक की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-2, पृष्ठ-16, 'सेवासदन के कथानक की विशेषताएँ' तथा पृष्ठ-17, प्रश्न 3

प्रश्न 4. 'साहित्य का उद्देश्य' के विचार पक्ष का विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-65, 'विचार पक्ष'

प्रश्न 5. 'पूस की रात' कहानी की कथावस्तु पर विचार करते हुए उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-9, पृष्ठ-81, 'कथावस्तु'

प्रश्न 6. 'पंच परमेश्वर' कहानी की भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-13, पृष्ठ-124, प्रश्न 4

प्रश्न 7. 'दो बैलों की कथा' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-16, पृष्ठ-148, 'कहानी का सार'

प्रश्न 8. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए

(क) 'निर्मला' उपन्यास।

उत्तर निर्मला, मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित प्रसिद्ध हिन्दी उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1927 में हुआ था। 1926 में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह को आधारबना कर इस उपन्यास का लेखन प्रारम्भ हुआ। इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली महिलाओं की पत्रिका 'चाँद' में नवम्बर 1925 से दिसम्बर 1926 तक यह उपन्यास विभिन्न किस्तों में प्रकाशित हुआ।

महिला-केन्द्रित साहित्य के इतिहास में इस उपन्यास का विशेष स्थान है। इस उपन्यास की कथा का केन्द्र और मुख्य पात्र 'निर्मला' नाम की 15 वर्षीय सुन्दर और सुशील लड़की है। निर्मला का विवाह एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से कर दिया जाता है, जिसके पूर्व पत्नी से तीन बेटे हैं। निर्मला का चरित्र निर्मल है, परन्तु फिर भी समाज में उसे अनादर एवं अवहेलना का शिकार होना पड़ता है। उसकी पति परायणता काम नहीं आती। उस पर सन्देह किया जाता है, उसे परिस्थितियाँ उसे दोषी बना देती हैं। इस प्रकार निर्मला विपरीत परिस्थितियों से जूझती हुई मृत्यु को प्राप्त करती है।

निर्मला में अनमेल विवाह और दहेज प्रथा की दुखान्त व मार्मिक कहानी है। उपन्यास का लक्ष्य अनमेल-विवाह तथा दहेज प्रथा के बुरे प्रभाव को अंकित करता है। निर्मला के माध्यम से भारत की मध्यवर्गीय युवतियों की दयनीय हालत का चित्रण हुआ है। उपन्यास के अन्त में निर्मला की मृत्यु इस कुत्सित सामाजिक प्रथा को मिटा डालने के लिए एक भारी चुनौती है। प्रेमचन्द ने भालचन्द और मोटेराम शास्त्री के प्रसंग द्वारा उपन्यास में हास्य की सृष्टि की है।

निर्मला के चारों ओर कथा-भवन का निर्माण करते हुए असम्बद्ध प्रसंगों का पूर्णत: बहिष्कार किया गया है। इससे यह उपन्यास सेवासदन से भी अधिक सुग्रंथित एवं सुसंगठित बन गया है। इसे प्रेमचन्द का प्रथम 'यथार्थवादी' तथा हिन्दी का प्रथम 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास' कहा जा सकता है। निर्मला का एक वैशिष्ट्य यह भी है कि इसमें 'प्रचारक प्रेमचन्द' के लोप ने इसे न केवल कलात्मक बना दिया है, बल्कि प्रेमचन्द के शिल्प का एक विकास-चिन्ह भी बन गया है।

(ख) 'कर्बला' का भावपक्ष।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-5, पृष्ठ-47, 'भावपक्ष'

(ग) 'साहित्य का उद्देश्य' की शैलीगत विशेषताएँ।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-72, प्रश्न 6

(घ) 'पंच परमेश्वर' का प्रतिपाद्य।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-13, पृष्ठ-122, 'कहानी का प्रतिपाद्य'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

प्रेमचंद

प्रेमचंद का परिचय और साहित्य

1

परिचय

प्रेमचंद को हिंदी और उर्दू के महानतम लेखकों में गिना जाता है। प्रेमचंद को हिंदी साहित्य का कथा-सम्राट कहा जाता है। उन्होंने 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गोदान' आदि उपन्यासों की रचना की है। 'पंच परमेश्वर', 'दो बैलों की कथा', 'पूस की रात', 'कफन' आदि उनकी बहुचर्चित कहानियाँ हैं।

उन्होंने हिंदी में तीन नाटकों की रचना भी की है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में कथ्य और शिल्प के स्तर पर व्यापक समानता मिली है। उन्होंने उपन्यासों में शोषित, पीड़ित जनता के दु:ख दर्द सामाजिक समस्याओं को स्थान दिया अपने सृजन के मध्यम पड़ाव पर प्रेमचंद ने जिस कथा-साहित्य की रचना की, आलोचकों ने उसे आदशोन्मुख-यथार्थवादी रचनाएँ कहा। लेखन के अंतिम सोपान पर पहुँचते-पहुँचते प्रेमचंद का आदर्श से मोह भंग हो गया। यथार्थ ने वहाँ स्थान ले लिया। प्रेमचंद ने सामाकि यथार्थ की उभारा है।

अध्याय का विहंगावलोकन

प्रेमचंद का जीवन परिचय

धनपतराय श्रीवास्तव (31 जुलाई 1880 से 8 अक्टूबर 1936), जो प्रेमचंद नाम से जाने जाते है, हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। उन्होंने 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा 'कफन', 'पूस की रात', 'दो बैलों की कथा' आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं।

इनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। वे सात वर्ष के थे, अत: माता का स्वर्गवास हो गया पंद्रह वर्ष की उम्र ने विमाता ने उनका विवाह उनसे बड़ी उम्र की लड़की से कर दिया। 16 वर्ष की आयु में उनके पिता का देहांत हो गया। पत्नी एवं विमाता से नहीं बनने के कारण इन्होंने घर छोड़ दिया।

साहित्य से बहुत की गहरा संबंध है, उन्होंने 16 साल की आयु से ही सौतेली माँ व्यवहार, बचपन की शादी, पिता का देहांत उनके अनुभव थे, सच्चाई उनके कथा साहित्य में झलक उठे। 13 वर्ष की उम्र में उन्होंने 'तिलिस्म-ए-होशरूबा' पढ़ लिया। 1906 में उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया जो जीवन भर उनके साथ रही। उनका पहला उपन्यास 'हम खुर्मा' और 'हम सबाब' (1906) माना जाता है। उनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' (1907) मानी जाती है। उनका पहला कहानी संग्रह 'सोजे-वतन 1909' में छपा। इस संग्रह में देशप्रेम की भावुक ललकार मिलती है।

लेखन के रूप में नवाबराय नाम चुना, परंतु सरकार को यह पता चल गया। उन्हें जिलाधीश से डांट-फटकार पड़ी और भविष्य में ऐसी कहानियाँ ना लिखने की हिदायत दी और संग्रह जब्त कर लिया। फिर उन्होंने प्रेमचंद नाम से लिखना, शुरू किया। 1910 में 'बड़े घर की बेटी' पहली कहानी छपी।

प्रेमचंद के जीवन का क्वींस कॉलेज बनारस को प्रेमचंद दसवीं की परीक्षा पास की। 1899 ई. में प्रेमचंद ने सहायक अध्यापक की नौकरी करनी प्रारंभ की।

बाद में वे स्कूल इंस्पेक्टर बना दिए गए यह समय भारतीय इतिहास में महात्मा गाँधी स्थापित होने के पहले का था। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन के समय प्रेमचंद गोरखपुर में नौकरी कर रहे थे। 8 फरवरी, 1921 को गाँधी जी इलाहाबाद पहुँचे। जनसभा को संबोधित किया। महात्मा गाँधी के अपील पर प्रेमचंद के अनुकूल प्रभाव पड़ा। उन्होंने पत्नी से सलाह कर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

नौकरी छोड़ने के पश्चात वह महावीर प्रसाद पोद्दार के साथ गए चरखे का प्रचार किया। उन्होंने कई निजी संस्थानों में अध्यापकों पर टिक नहीं सके। इसी क्रम में जुलाई 1923 में बनारस में 'सरस्वती प्रेस' की स्थापना की। इसी प्रेस से बाद में प्रेमचंद ने 'हंस' और जागरण को प्रकाशित किया। जून 1916 की सरस्वती में 'पंच परमेश्वर' शीर्षक से यह कहानी प्रकाशित हुई, अब धीरे-धीरे साहित्य में आने लगे अभी तक उर्दू में लिखते थे। अब हिंदी में लिखने लगे। हिंदी ने जब 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। उसके बाद प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' उपन्यास की रचना की।

डेढ़ साल बाद प्रेमचंद पुन: लखनऊ गए इस बार उन्हें प्रसिद्ध हिंदी पत्रिका 'माधुरी' का संपादक बनाया गया। प्रेमचंद के साथ कृष्ण बिहारी मिश्र थे। इसके बाद अलवर नरेश ने उन्हें अपनी

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

रियासत बुलाया। उन्हें 400 रुपये मासिक के साथ बंगला, मोटर, चाकर आदि का प्रस्ताव दिया, जो उन्होंने नम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। अंग्रेज सरकार ने उन्हें 'रायसाहब' का खिताब देना चाहती थी, वह भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

1927 में हिन्दुस्तानी एकेडमी का उद्घाटन हुआ। धीरे-धीरे हिंदी संसार के प्रतिष्ठित लेखक हो गए। उन्हें उपन्यास सम्राट कहा जाने लगा। इस दौरान प्रेमचंद पर दो गंभीर आरोप लगे कि 'रंगभूमि' 'वेनिटी फेयर' की नकल है और 'प्रेमाश्रम' 'रिजरेक्शन' की नकल है। उन पर ज्योतिप्रसाद निर्मल और ठाकुर श्रीनाथ सिंह ने दो आरोप लगाए कि वह ब्राह्मण विरोधी हैं, दूसरे वे घृणा के प्रचारक हैं।

जनवरी 1928 में 'माधुरी' में 'पंडित मोटेराम शास्त्री' प्रकाशित हुई। इस कहानी पर किन्हीं शास्त्री जी ने उन पर मानहानि का मुकदमा कर दिया, किंतु मुकदमा खारिज हो गया। 1931 में उन्होंने 'माधुरी' का संपादन छोड़ दिया। 8 अक्टूबर 1936 उनकी मृत्यु हो गई। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' था।

उपन्यासकार प्रेमचंद

हिंदी-उर्दू में प्रेमचंद की ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में है। वे 'उपन्यास सम्राट' कहलाते हैं। उन्होंने उर्दू-हिंदी दोनों भाषाओं में लेखन कार्य किया। उनके प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

वरदान–प्रेमचंद पर आर्य समाज का प्रभाव था, अतः उन्होंने 'जलवए ईसार' नामक उपन्यास लिखा। हिंदी में यह 'वरदान' के नाम से प्रकाशित हुआ। यह प्रेमचंद का धार्मिक-सामाजिक उपन्यास है। इसमें एक महिला अष्टभुजा देवी से प्रार्थना कर वरदान रूप में ऐसा पुत्र मांगती है, जो देश का उपकार करे। उसे प्रतापचन्द्र नामक पुत्र मिलता है, जो बाद में संन्यासी बनकर स्वामी बालाजी नाम से प्रसिद्ध होता है। इस उपन्यास से यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को अपने निजी सुख को छोड़कर राष्ट्र की सेवा करते रहना चाहिए।

सेवासदन–सेवासदन की रचना पहले उर्दू में 'बाजार ए हुस्न" शीर्षक से पहले उर्दू में हुई। बाद में यह 'सेवासदन' नाम से हिंदी में छपा। यह उपन्यास वेश्या समस्या पर लिखा गया था। इसकी नायिका सुमन नौकरीपेशा परिवार की लड़की है। उसके पिता ईमानदार पुलिस वाले हैं, परंतु पुत्री के विवाह के लिए दहेज की व्यवस्था करने के लिए रिश्वत लेते हैं, किंतु पकड़े जाते हैं और जेल हो जाती है। सुमन की शादी विधुर गजाधर से करनी पड़ती है।

विवाह के बाद आर्थिक तंगी तनाव कारण था, फिर जवान पत्नी पर संदेह कर एक दिन गजाधर सुमन को घर से निकाल देता है। वह पड़ोस रहने वाले वाले वकील से आश्रय मांगती है, पर आश्रय ना मिलने पर वह भोली वेश्या के घर आश्रय लेती है और वेश्या बन जाती है। शहर में वेश्याओं सुधार का आंदोलन चलता है, वही वकील उस आंदोलन का नेता होता है। इसी उथल-पुथल में गजाधर आत्मग्लानि से पीड़ित होकर संन्यासी बन जाता है। अंत में वेश्याओं के लिए एक 'सेवासदन' नामक आश्रम की स्थापना होती है। अंत में सुमन और गजाधर मिलकर मानवता की सेवा करने लगते हैं।

'सेवासदन' में मूलतः समाज में नारी की हीन स्थिति तथा समाज की परिस्थितियों के कारण नारी को व्यभिचार की ओर धकेलने की समस्या को उठाया गया है।

'सेवासदन' की मुख्य समस्या वेश्या समस्या है, परंतु इसमें प्रेमचंद ने भारतीय परिवारों में स्त्री की स्थिति, स्त्री-पुरुष संबंधों की असमानता, दहेज प्रथा आदि परंपराओं का उजागर किया। हिंदी समाज ने उत्साहपूर्वक इस उपन्यास का स्वागत किया।

प्रेमाश्रम–यह उपन्यास किसान जीवन की समस्याओं पर आधारित है। इसकी रचना असहयोग आंदोलन के समय हुई थी। 'प्रेमाश्रम' की मूल समस्या जमींदारी समस्या है। असहयोग आंदोलन के पश्चात प्रेमचंद के नजरिये में बदलाव हो गया था। इसके बाद वह मानने लगे कि अंग्रेजी शासक किसानों के सबसे बड़े दुश्मन हैं। इस उपन्यास का नायक कोई एक पात्र नहीं है वरन् लखनपुर गाँव के सारे किसान ही नायक हैं। उपन्यास के अंत में सभी किसान खुशहाल है। प्रेमशंकर जमींदार से दूर हटकर किसानों के लिए 'प्रेमाश्रम' की स्थापना करता है।

रंगभूमि–यह प्रेमचंद पहला उपन्यास है, जो मूलतः हिंदी में लिखा गया। इसका रूपांतरण उर्दू में हुआ था। इसका मुख्य पात्र भिखारी सूरदास है, इसकी जमीन उद्योगपति जॉनसेवक लेना चाहता है, किंतु सूरदास राजी नही है। जमीन के बाद वह पाण्डेपुर की आवासीय जमीन और झोपड़ा भी लेना चाहता है। इस कारण संघर्ष होता है, आंदोलन होता है, दो दल बन जाते हैं। राजा महेंद्र प्रताप का पक्ष लेते हैं। विनय और सोफिया सूरदास का समर्थन करते हैं। अंत में सूरदास मारा जाता है। कारखाना खुल जाता है। इसके माध्यम से प्रेमचंद साम्राज्यवादी नीति को स्पष्ट करते हैं।

निर्मला–'निर्मला' उपन्यास 'चाँद' पत्रिका में 1925 से 1926 तक प्रकाशित हुआ, इसमें दहेज प्रथा के कारण बेमेल विवाह की समस्या का चित्र किया गया है। यह एक पहला उपन्यास है, जिसमें स्वाधीनता का वर्णन नहीं किया गया। इसमें बेमेल विवाह के कारण युवा नारी की धीमी-धीमी हत्या होते दिखाया है। इसका अंत बहुत दुःखद है।

कायाकल्प–इसमें प्रेमचंद ने सामाजिक-राजनीतिक जीवन के साथ अलौकिक कल्पनाओं को भी चित्रित किया है। इस तरह उपन्यास के दो केंद्र हैं। पहले केंद्र में जगदीशपुर की रानी देवप्रिया का भोग-विलास है। दूसरे केंद्र में चक्रधर है, जो दोनों कहानियों को जोड़ता है। पहले भाग में धर्म और विज्ञान तथा योग तथा भोग को मिलाकर चिर यौवन प्राप्त करने की आकांक्षा है। यह प्रेमचंद का अपेक्षितः कमजोर उपन्यास है।

गबन–प्रेमचंद का यह उपन्यास सविनय अवज्ञा आंदोलन से पहले का है। इसकी शुरुआत स्त्रियों के आभूषण से प्रेम में शुरू होती है। इसका नायक रामनाथ अविचारशील मध्यम वर्गीय पात्र है। इसमें नायिका जालपा है, जिसका अंत में चरित्र परिवर्तन होता है। पहले वह आभूषण प्रिय नारी है। इस उपन्यास में पुलिस किसानों पर अत्याचार करने में जमींदारों का साथ देती थी। उपन्यास में पुलिस को अंग्रेज सरकार के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किया

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

गया है। बाद में वह एक परम राष्ट्रभक्त और क्रांतिकारी के रूप में सामने आती है और अपने व्यक्तित्व से अपने पति में भी साहस का संचार करती है। इसमें प्रेमचंद ने उस कानून को बदलने की वकालत की है, जिसमें पति की मृत्यु के बाद संपति का अधिकार पत्नी को नहीं मिलता था। इसी महत्त्वपूर्ण विषय पर प्रेमचंद ने लेख और कहानियाँ भी लिखी हैं।

कर्मभूमि–इस उपन्यास में किसान जीवन और नगर में चलने वाले आंदोलन में शामिल किए गए हैं। इसमें पहले अंग्रेज सिपाही आते हैं। मुन्नी के साथ बलात्कार करते हैं, कुछ समय बाद मुन्नी उनकी हत्या कर देती है। मुन्नी को पुलिस पकड़ लेती है। मुन्नी के पक्ष में आंदोलन हो जाता है। प्रेमचंद ने इन्होंने लगान बंदी आंदोलन का चित्रण किया है व इसके साथ-साथ दलितों और अछूतों के मंदिर प्रवेश किया है व इसके साथ दलितों और अछूतों के मंदिर प्रवेश की समस्या आती है।

अमरकांत इस आंदोलन का प्रमुख पात्र है। सुखदा, मुन्नी, डॉ. शांति कुमार, सकीना आदि भी महत्त्वपूर्ण पात्र हैं। इस उपन्यास में गाँव और शहर के आंदोलन मिल जाते हैं। यह इसमें भाग लेने वाले पात्रों के कारण हो पाता है। किंतु सरकारी आंदोलन के कारण यह आंदोलन विफल हो जाता है और सरकार व आंदोलनकारियों के बीच एकता हो जाती है। प्रेमचंद के अनुसार ऐसा आंदोलन दुबारा अवश्य होना चाहिए, जिससे किसी को लाभ हो या ना हो जनता जागृत अवश्य हो गई। कला को दृष्टि से इस उपन्यास को खास उपलब्धि नहीं मिल पाई।

गोदान–यह प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास है। इसके मुख्य पात्र होरी और धनिया हैं। होरी ढीला-ढाला दब्बू किसान है, तो धनिया उसकी पत्नी तेज-तर्रार है। इसमें उन्होंने निडरता से किसानों के शोषण की कहानी कही है। इसमें नगर और गाँव दोनों कहानियाँ साथ-साथ चलती हैं। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में पूरे समाज का चित्रण करने की कोशिश की है। वे इस कहानी को इस तरह सुनाते हैं, जिससे पढ़ने वाला किसानों का पक्षधर हो जाए। इसके साथ ही प्रेमचंद को अशिक्षित किसानों के भावों को भाषा में बांधना है। प्रेमचंद इसमें पूरी तरह से सफल हुए हैं। इनका लेखन और विचार निरंतर विकासमान रहे। उसमें इन्होंने लगातार परिवर्तन किए।

प्रेमचंद के उपन्यासों की सामान्य विशेषताएँ

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में अपने समय के समाज को बहुत ही बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में किसानों के दर्द, स्त्रियों की स्थिति आदि का बहुत ही संजीदा वर्णन किया है। उनके उपन्यास पढ़ते समय पाठक स्वयं उस दर्द को महसूस करते हैं।

प्रेमचंद के उपन्यास आदर्श के यथार्थ की यात्रा का व्याख्यान करते हैं। उनमें तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का संतुलित वर्णन करते हैं। इतना ही नहीं मुंशी प्रेमचंद मनोविज्ञान के स्तर पर भी अपने पात्रों को मजबूत करते हैं। जमींदारी प्रथा, ग्रामीणों का शोषण, जातिगत कुत्सिकता, लैंगिक असमानता, बेमेल विवाह और उससे उत्पन्न समस्याएँ आदि ऐसे यथार्थ हैं, जो वास्तव में उस समय थे और उन्हीं का प्रकटीकरण मुंशी प्रेमचंद ने किया। भाषा इनकी सहज और सरल है। वे भारी-भरकम शब्दों से बचते हैं और शायद यह उनकी लेखन-नीति का हिस्सा है।

मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास अपने समय की तस्वीर प्रस्तुत करते है। यद्यपि प्रेमचंद के उपन्यासों में आदर्श भी महसूस किया जा सकता है। प्रेमचंद साहित्य की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने वही लिखा है जो कि उन्होंने देखा और भोगा। यही कारण है कि प्रेमचंद और उनका साहित्य विशेष रूप से उनके उपन्यास आज भी प्रासंगिक है।

प्रेमचंद की नजर समाज पर और सामाजिक परिवर्तन पर रहती है। प्रेमचंद समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण करते हैं। उपन्यास पढ़ने के बाद हमें उस समस्या और उसके समाधान की जानकारी मिल जाती है। उनके उपन्यासों में एक से अधिक समस्याओं का चित्रण किया है, इसलिए उनकी रुचि पात्रों के निर्माण में नहीं, बल्कि इन समस्याओं के उद्घाटन में रहती है।

प्रेमचंद वास्तव अपने उपन्यासों के द्वारा शिक्षक का कार्य करते हैं, जैसे–लोगों को सही राह दिखाना, सत्य से परिचित कराना, समाज में फैली विसंगतियों से अवगत कराना।

कहानीकार प्रेमचंद

इनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' 1970 में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी संग्रह 'सोजेवतन' में शामिल की गई, यह कहानी संग्रह उर्दू में छपा था तथा नवाबराय के नाम से प्रकाशित हुआ, इस संग्रह को अंग्रेजी जिलाधीश ने जब्त कर लिया और भविष्य में ऐसा कुछ ना लिखने पर पाबंदी लगा दी। उन्होंने दुबारा लिखने के विचार ने इन्होंने अपना नाम प्रेमचंद रख लिया। फिर यह देश प्रेम के स्थान पर ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों पर लिखने लगे उन्हें साहित्य की शक्ति का एहसास हुआ, अत: लेखन की गंभीरता से लिखने की जरूरत को समझा।

इस नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' छपी। इन्होंने मनोरंजन प्रधान कहानियाँ नहीं लिखी, इसके बदले उन्होंने उद्देश्य परक कहानियाँ लिखी। वह कहानी को मनोरंजन का हिस्सा नहीं दु:ख और पीड़ा का किस्सा कहते हैं। यह विचलन उनकी कहानियों की विशेषता है। वे कहानियों में मूल विषय पर ही केंद्रित रहते है। उनके अनुसार भाषा सरस होनी चाहिए, सुबोध होनी चाहिए उनकी कहानी के अंत में उपदेश या संदेश जरूर होता है, जैसे–'ईदगाह' और 'बैर का अंत' में निर्दोष बच्चों की आँखों से इस कूर सच को दिखाया है। 'मैकू' और 'शराब की दुकान' में शराब की दुकानों पर दिए गए धरने हैं। 'चकमा' में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का दृश्य दिखाया गया है।

प्रेमचंद की गिनती उन विशिष्ट लेखकों में की जाती है, जिन्होंने नियमित रूप लेखन किया। प्रेमचंद की दूसरी विशेषता यह है उनकी लेखन और शैली लगातार विकसित होती रही, हर कहानी में पिछली कहानी की कमियों को दूर करते रहे। उन्होंने स्वयं को सुख पहुँचने वाली रचनाएँ नहीं लिखीं, अपितु वे समाज में जागृति फैलाना चाहते थे। स्वाधीनता आंदोलन में सहयोग देना चाहते थे। देश को विकसित करना चाहते हो। प्रेमचंद ने शिक्षित समाज के सामने बेजुबान किसानों की पीड़ा व्यक्त की है। प्रेमचंद ने मनोरंजन प्रधान कहानियाँ नहीं लिखीं, अपितु उद्देश्यपरक कहानियाँ लिखीं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उद्देश्य की सिद्धि के लिए उन्होंने जीवन में आने वाली सच्चाइयों का उपयोग किया, उसी का वर्णन भी किया। वे कहानी के मूल विषय पर स्थिर रहते हैं। कहानी को प्रेमचंद कई बार गल्प या आख्यायिका भी कहते हैं। एक जगह उन्होंने अंतर भी स्पष्ट किया है। वे लिखते हैं, "उपन्यास में आपकी कलम में जितनी शक्ति हो, उतना जोर दिखाइए, राजनीति पर तक कीजिए। किसी के वर्णन पर दस-बीस पेज लिख डालो, भाषा सरल होनी चाहिए।"

कहानी की भाषा सुबोध होनी चाहिए, उपन्यास को लोग पढ़ते है, जिनके पास रुपया है और समय है। जिनके पास धन और समय नहीं होता, उनके लिए कहानी लिखी जाती है। किस्सागो प्रेमचंद और शिक्षक प्रेमचंद दोनों मिलकर कहानीकार प्रेमचंद बनते हैं। उनकी कहानी के किस्से का अंत होते-होते उपदेश न सही संदेश जरूर होता है। बिना किसी प्रेरणा या संदेश के उनकी कहानी समाप्त नहीं होती। 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'पूस की रात' आदि समाज की सड़ी-गली परंपराओं पर करारी चोट है। 'बेटों वाली विधवा' में नारी विरोधी कानूनों पर प्रहार किया है। उनकी कहानियाँ समाज में जागृति फैलाती हैं, वे सुधार करना चाहते हैं। किस प्रकार सिर्फ 'सवा सेर गेहूँ' के बदले किसान आजीवन बंधुआ मजदूर बन जाता है और उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा उसका काम करता है।

'बड़े घर की बेटी', 'नमक का दारोगा' जैसी कहानियाँ लिखीं। इन्होंने स्त्री की पराधीनता पर बहुत-सी कहानियाँ लिखीं। बाल विवाह विधवा विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं पर भी लेखन किया। दलित व अछूतों के मंदिर प्रवेश का भी आंदोलन चला। इस विषय पर भी कहानी लिखी।

प्रेमचंद ने उस समय के सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों को ध्यान में रखकर कहानियाँ लिखीं।

नाटककार प्रेमचंद

प्रेमचंद मूलत: कहानीकारी थे। उन्होंने तीन नाटकों की रचना की है–

1. 'संग्राम' (1942)
2. 'कर्बला' (1924)
3. 'प्रेम की वेदी' (1933)।

आलोचकों का विचार है कि उनके नाटक भी मूलत: उपन्यास य कहानी ही है, जिन्हें उन्होंने नाटक का रूप दे दिया है। उन्होंने नाटककार जैसे गार्ल्स वर्दी के तीन नाटकों का अनुवाद किया।

1. 'हड़ताल'
2. 'चाँदी की डिबिया'
3. 'न्याय'।

इसके अलावा प्रेमचंद ने जार्ज बर्नार्ड शॉ के एक नाटक का अनुवाद किया। 'सृष्टि का आरंभ' यह उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ था।

गार्ल्स वर्दी के ये नाटक 1930 में हिन्दुस्तान एकेडमी में छपे थे। इन्होंने अपने इन नाटकों में अंग्रेजी न्याय-व्यवस्था और जेल व्यवस्था की अमानवीयता को उजागर किया था। इसके छपने के बाद इंग्लैंड की जेल व्यवस्था में सुधार किया गया। गार्ल्स वर्दी ने 'चाँदी की डिबिया' में दिखाया है कि वहाँ पर अमीर और गरीब में भेद किया जाता है और वह भी कानून, न्याय और सहद्वयता की ओट में अपने नाटक लेखन के दौरान ही प्रेमचंद ने इन नाटकों का अनुवाद किया था।

संग्राम (1922 ई.)–उनका पहला नाटक 'संग्राम' है। प्रेमचंद के अनुसार यह राजनीतिक नाटक नहीं है, वरन् एक 'सामाजिक नाटक' है। इस नाटक के प्रमुख पात्र–हलप्पर, राजेश्वरी, सबल सिंह, ज्ञानी आदि हैं। नाटक में कुल पांच अंक हैं। नाटक के प्रारंभ में सबल सिंह हलप्पर की पत्नी राजेश्वरी के प्रति आकर्षित होती है। यह आकर्षण-विकर्षण अंत तक चलता है। सबल सिंह सच्चरित्र प्रौढ़ शादी-शुदा है। वह अपनी पत्नी ज्ञानी से प्यार करते हैं, लेकिन राजेश्वरी को देखते ही चाहने लगता है। वह छल से हलधर को जेल भिजवा देता है। राजेश्वरी उसके घर आ जाती है। प्रेम करते-करते राजेश्वरी को संपूर्ण रूप से पाना चाहता है। इसी बीच सबल सिंह का छोटा भाई भी राजेश्वरी को चाहने लगता है। इसी बीच गाँव में साधू चेतनदास आ जाता है, उसकी नजर सबल सिंह की पत्नी ज्ञानी पर है। हलधर डाकू बन जाता है, वह सबल सिंह से बदला लेना चाहता है, परंतु साधु उनको बचाने का माध्यम बनता है।

नाटक का प्रमुख पात्र कामभावना से पीड़ित है और नायिका अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए तत्पर रहती है, जिसमें स्त्री पात्रों के सतीत्व की रक्षा करने में सफल होता है। इसमें सभी पात्र आत्महत्या करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाते हैं, लेकिन ज्ञानी के अलावा कोई पात्र आत्महत्या नहीं करता। चेतनदास कभी अपने को सुधार लेता है। इस नाटक से यह संदेश मिलता है कि जमींदार हीन भारत में किसान खुशहाल रह सकता है।

कर्बला (1924)–यह एक ऐतिहासिक नाटक है। यह इस्लाम के इतिहास की आपसी संघर्ष की क्रूरतम घटना है। कर्बला वर्तमान में इराक के बगदाद से लगभग 100 किलोमीटर दूर एक शहर है। यहाँ पैगम्बर मोहम्मद के नाती हजरत इमाम हुसैन और खलीफा मजीद के समर्थकों के बीच युद्ध हुआ था। इसमें पांच अंकों का नाटक है। नाटक की मूल विषय-वस्तु युद्ध से संबंधित है। इतिहास और परंपरा ने जिन पात्रों को खलनायक के रूप में पहचान दी है। प्रेमचंद ने उन्हें उसी रूप में प्रस्तुत किया है। इमाम हुसैन अत्यंत दयालु, वीर और प्रभावशाली रूप में नाटक में आते हैं। इसकी प्रेमचंद ने खुलकर तारीफ की है।

प्रेम की वेदी (1933)–इस नाटक में कुल आठ दृश्य हैं। इसके प्रमुख पात्र है। जेनी, मिसेज गार्डन, विलियम, उमा, योगराज आदि। मिसेज गार्डन ईसाई है तथा उमा और योगदाज हिन्दू हैं। जेनी बी.ए. पास है। वह स्वतंत्र विचारों की है अर्थात वह विवाह के बंधन में नहीं पड़ना चाहती है। उसको लगता है कि विवाह करने से स्त्री पुरुष की गुलाम बन जाती है।

प्रेमचंद को लगता है कि आधुनिक शिक्षा से स्त्री स्वतंत्र हो जाती है। शिक्षित नारी मनमर्जी से चलती है। नियंत्रण से बाहर हो जाती है। परिवार से अलग हो जाती है, इसलिए वह पितृसत्ता की मर्यादा को नहीं मानती। वह सिर्फ ईसाईयों में या एग्लो-इंडियन परिवारों में ही संभव है। प्रेमचंद अपनी रचनाओं में अंतर्धार्मिक

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com